Dr. Sunil Kr. 'Suman'
Assistant Professor (Guest)
Dept. of Psychology.
D.B. College Jaynagar
L.N.M.U. Darbhanga

Date:
Study material
B.A. Part-II
Paper-IV
Date 25-8-2020
DO-Next-Class.

Structuralism

Contribution of Titchener

(3) चयन के नियम (Principles of Selection)

:- टिचेनर इस समस्या पर ध्यान देने की कोशिश किया है कि व्यक्ति क्यों कुछ उद्दीपकों का चेतन में चयन कर लेता है? वे इस समस्या का समाधान ध्यान (Attention) के संप्रत्यय (concept) द्वारा किया है। उनका मत है कि ध्यान में सभी चेतन तत्व इस तरह से सुव्यवस्थित (arrange) हो जाता है कि वे चेतन के केन्द्र (Focus) बन जाते है। इस तरह से ध्यान के संप्रत्यय को टिचेनर ने संवेदी स्पष्टता (Sensory clarity) के तुल्य माना है। उन्होंने ध्यान के तीन अवस्थाओं सामान्य अवस्थाओं (general stages) का वर्णन किया है।- अनैच्छिक या प्राथमिक ध्यान (involuntary or Primary attention), ऐच्छिक या द्वितीयक ध्यान (voluntary or secondary attention) तथा व्युत्पन्न या अभ्यासगत अनैच्छिक ध्यान (drived or habitual involuntary attention)। अनैच्छिक या प्राथमिक ध्यान में संवेदी अनुभूति की कुछ विशेषताएं जैसे गुण (Quality) तथा तीव्रता (intensity) के आधार पर व्यक्ति किसी वस्तु या घटना की ओर ध्यान देता पाया जाता है। अचानक आवाज होने या परेशानी रोशनी की तीव्र चमक होने पर व्यक्ति का ध्यान बिना इच्छा के ही चला

P.T.O

Scanned with CamScanner

चला जाता है। यह अनैच्छिक ध्यान का उदाहरण है। ऐच्छिक या द्वितीयक ध्यान से तात्पर्य चेतन तत्वों पर किसी निश्चित उद्देश्यों के साथ ध्यान केन्द्रित करने से होता है। टिचेनर ने इसे एक कठिन अवस्था बतलाया है क्योंकि इसमें व्यक्ति को स्पष्टता के उच्चतर स्तर पर ध्यान को केन्द्रित करके रखना पड़ता है। व्युत्पन्न या अभ्यासगत अनैच्छिक ध्यान में व्यक्ति समान परिस्थिति के दोहराये जाने के कारण ध्यान देता है। यहाँ ध्यान देने का आधार सीखी गयी आदतें होती है। टिचेनर ने इन तीनों अवस्थाओं का सतत (continuous) न की एक दूसरे से अलग माना है। उसके अनुसार व्यक्ति का मुख्य उद्देश्य अन्तिम अवस्था में पहुँचना होता है। क्योंकि इस अवस्था में कम से कम प्रयास में वे व्यक्ति का ध्यान चेतन अनुभूति पर केन्द्रित रहता है।

Next class